कविता कृष्णपल्लवी की कविताएँ

आग

एक
आग है
फिर-फिर आविष्कृत
एक आदिम राग।
कहती हुई
जाग! जाग!!

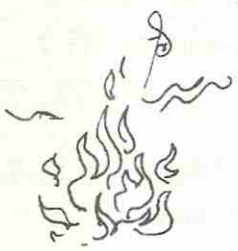

दो
आग
एक बेहद पुरानी चीज़ है
मनुष्य के लिए
मगर उतनी ही ज़रूरी।
बेशक
उसे दहकाने के तरीके
ईजाद होते रहे हैं
नये-नये।
आग की ज़रूरत से इंकार
बदलाव से इंकार है।
जीवन की विदाई है
आग के लिए विदागीत।
मृत्यु की अभ्यर्थना है।

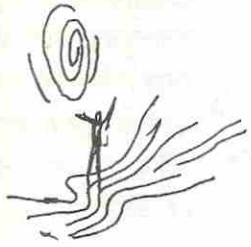

तीन
चूल्हे बुझ चुके हों
जिस बस्ती में
हमेशा के लिए।
वहाँ कोई नहीं होता
मुसाफिर का
स्वागत करने के लिए।
चूल्हों का बुझना
जीवन का बुझ जाना है।

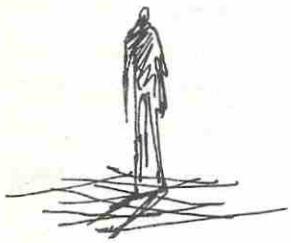

चार
मगर एक तीली भी
बची हो कहीं,
तो फिर से
जीवित की जा सकती है आग।
लपटों के नृत्य पर
तरंगित हो सकता है जीवन
फिर से।

बाज़ार

एक
हामिद के बेटे
गये थे बाजार।
अँधेरे कोने में कहीं
जंग खा रहा था
वह चिमटा
जो मेले से लाया था
हामिद
दादी अमीना के लिए।

दो
बर्फ़बारी हो रही थी
बाजार में
बमबारी से भी बुरी
घर में
मद्धम आँच पर
सिंक रही थी ज़िन्दगी
राहत पाने के लिए थी
सिर्फ गर्म-ताज़ा रोटियों की गंध